भगवद् गीता का ज्ञान – (7)

आत्मा का स्वरूप व उसके गुण

युद्ध-स्थल पर अर्जुन अपने सम्मुख शत्रु-दलमें खड़े अपने कुटुम्बिओं एवं स्वजनों को देखकर व्यथित एवं निढाल हो गए। अर्जुन ने बड़े ही समर्पण भाव से और बड़ी नम्रता पूर्वक श्रीकृष्ण से मार्ग दर्शन के लिए प्रार्थना की। इस पर भगवान् श्रीकृष्ण ने एक गुरु की भावना से अर्जुन को उपदेश देना आरम्भ किया। सर्व-प्रथम उन्होंने अर्जुन को उसकी शोक तथा सम्मोहन की मानसिक स्थिति से बाहर निकालने के उद्देश्य से शरीर और आत्मा के सम्बन्ध का ज्ञान दिया और आत्मा के स्वरूप व गुण के बारे में समझाया।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा । तथा देहान्तरप्राप्ति र्धीरस्तत्र न मुह्यति॥२:१३॥

अर्थात - "जैसे जीवात्मा की इस देह (शरीर) में बालपन, यौवन और वृद्ध अवस्थाएं होती हैं, वैसे ही मृत्यु होने पर अन्य शरीर (अर्थात नए शरीर) की प्राप्ति होती है। उस विषय में धीर पुरुष मोहित (भ्रमित) नहीं होता (नहीं होना चाहिए)।" **(गीता – 2:13)**

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् । उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते॥२:१९॥

अर्थात - "जो इस जीवात्मा (या आत्मा) को मारने वाला समझता है और जो इसको मरा मानता है, वे दोनों ही नहीं जानते (अर्थात वे दोनों ही अज्ञानी हैं), क्योंकि यह आत्मा वास्तव में न तो किसी को मारता है और न किसी के द्वारा मारा जाता है।" **(गीता – 2:19)**

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥२:२०॥

अर्थात - "यह जीवात्मा (आत्मा) किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है, तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है; क्योंकि यह अजन्मा, नित्य (नित्य-निरंतर रहने वाला), सनातन और पुरातन (अनादि) है। शरीर के मारे जाने पर भी यह आत्मा नहीं मारा जाता।" **(गीता – 2:20)**

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥२:२२॥

अर्थात - "जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नए वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही देही (जीवात्मा या आत्मा) पुराने शरीरों को त्याग कर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होता रहता है।" **(गीता – 2:22)**

अंत में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं –

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥२:२३॥

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च। नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥२:२४॥

अर्थात - "न तो इसको (अर्थात आत्मा को) शास्त्र काट सकते हैं, न इसको अग्नि जला सकती है और न जल इसको गला सकता है, न ही वायु इसको सुखा सकती है। क्योंकि यह आत्मा अच्छेद्य, अदाह्य (न जलाया जा सकने वाला), अक्लेद्य (न गलाया जा सकने वाला) और अशोष्य (न सुखाया जा सकने वाला) है तथा यह नित्य-निरंतर रहने वाला, सर्व-व्यापी, अचल, स्थिर और सनातन है।" **(गीता – 2:23, 2:24)**

श्रीमद् भगवद् गीता के दूसरे अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा आत्मा के स्वरुप और गुणों के बारे में दिए गए उपरोक्त ज्ञान का सारांश इस प्रकार है -

1. *यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता है।*
2. *यह अजन्मा, नित्य-निरंतर रहने वाला, सर्व-व्यापी, अचल, स्थिर, सनातन और अनादि है।*
3. *शरीर के मारे जाने पर भी यह आत्मा नहीं मरता।*
4. *आत्मा पुराने शरीरों को त्याग कर अन्य नए शरीरों को प्राप्त होता रहता है।*
5. *न तो आत्मा को शास्त्र काट सकते हैं, न अग्नि इसको जला सकती है, न जल इसको गला सकता है, और न ही वायु इसको सुखा सकती है।*